3. जैन धर्म

600 वर्ष ईसा पूर्व में भारत की पुण्य भूमि पर जैन धर्म का उदय हुआ। इस धर्म के संस्थापक वर्धमान महावीर थे। उनका जन्म 540 ई.पू. में उत्तर बिहार के वैशाली के निकट कुंड ग्राम में एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। उनकी माता त्रिशला लिच्छवि नरेश चेतक की बहन थी। इस प्रकार महावीर का जन्म एक सुप्रसिद्ध, प्रतिष्ठित एवं समृद्ध क्षत्रिय घराने में हुआ था। इनका विवाह यशोदा नामक सुंदर राजकुमारी के साथ हुआ था। 468 ई.पू. में 72 वर्ष आयु में महावीर को पावापुरी में निर्वाण की प्राप्ति हुई। उनके द्वारा चलाया हुआ जैन धर्म आज भी जीवित है। भारत के कोने-कोने से प्रतिवर्ष सहस्त्रों जैनी पावापुरी की तीर्थ यात्रा पर आते हैं।

जैन अपने धार्मिक गुरु को तीर्थंकर कहते हैं। जैन जनश्रुतियों के अनुसार चौबीस तीर्थंकरों ने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार किया है। वर्धमान महावीर जैनों के अंतिम तीर्थंकर थे। जैन धर्म के प्रवर्तक ऋषिभदेव अयोध्या के सूर्यवंश में उत्पन्न हुए थे। पार्श्वनाथ इस धर्म के तेइसवें तीर्थंकर थे। वे वैदिक धर्म के कर्मकांड एवं देववाद के कटु आलोचक थे। वे प्रत्येक व्यक्ति को मोक्ष का अधिकारी समझते थे। पार्श्वनाथ ने ही जैन धर्म के चार महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों—अहिंसा, सत्य, असत्य तथा अपरिग्रह—की स्थापना की थी। वर्धमान महावीर ने पार्श्वनाथ के सिद्धांत में ब्रह्मचर्य सिद्धांत का योगदान दिया।

जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांत—जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

1. अनीश्वरवाद—जैन धर्म ईश्वर की सत्ता स्वीकार नहीं करता है। यह ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता नहीं मानता। इसके अनुसार ईश्वर जीव में ही निहित शक्तियों का श्रेष्ठतम व्यक्तिकरण है। इस धर्म के अनुसार आत्मा की सर्वोत्तम स्थिति ही ईश्वर है। यह सृष्टि के निर्माण एवं नष्ट होने में विश्वास नहीं करता। सृष्टि अनंत एवं अनादि है। जैनी ईश्वर के स्थान पर अपने तीर्थंकरों की पूजा करते हैं।

2. अहिंसा—जैन धर्म यज्ञ तथा अनुष्ठान का विरोधी है। इसमें अहिंसा पर विशेष बल दिया गया है। यज्ञों में पहले पशुओं की बलि दी जाती थी। जैन धर्म द्वारा हिंसा का विरोध किया गया। यह धर्म जड़ तथा चेतन सभी में जीव का वास मानता है। जैन धर्म के अनुसार आत्मा का शुद्धिकरण ज्ञान से नहीं वरन् उपवास, अहिंसा, सत्य, त्याग तथा इंद्रिय निग्रह से किया जा सकता है। जैन धर्म अनुयायी अहिंसा का पालन कठोरता से करते हैं। जैनी अभी भी मुंह पर कपड़ा बांधकर चलते हैं, सूर्योदय से पहले भोजन कर लेते हैं, रात में दीप नहीं जलाते हैं, पानी छानकर पीते हैं, रास्ता बहार कर चलते हैं, खेती, आखेट तथा युद्ध में भाग नहीं लेते हैं।

3. वेदों में अविश्वास—जैन धर्म वैदिक कर्मकांड के विरुद्ध एक संगठित आंदोलन था। यज्ञ, बलि तथा कर्मकांड के लिए जैन धर्म में कोई स्थान नहीं है।

Scanned with CamScanner

4. आत्मावाद—जैन धर्म के अनुयायी आत्मा के अस्तित्व तथा उसके अमरत्व में विश्वास करते हैं। उनके अनुसार जड़ तथा चेतन सभी पदार्थों में आत्मा निवास करती है। आत्मा से ज्ञान होता है तथा आत्मा क्रियाशील रहती है। आत्मा स्वभाव से शुद्ध होती है।

5. कर्म में विश्वास—जैनी लोग कर्म में पूरा विश्वास रखते हैं। इनके अनुसार कर्म के अनुसार ही शरीर, वंश तथा सुख-दुख की प्राप्ति होती है। इनके अनुसार कर्म का फल भोगने के लिए ही पुनर्जन्म होता है। कर्म फल से छुटकारा पाकर ही मनुष्य निर्वाण की ओर अग्रसर होता है।

6. त्रिरत्न—जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांत त्रिरत्न के नाम से जाने जाते हैं। त्रिरत्न के अंतर्गत सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन तथा सम्यक कर्म को गिना जाता है। सम्यक ज्ञान का अर्थ है जैन धर्म और मुक्ति के विषय में संपूर्ण और सच्चा ज्ञान। सम्यक दर्शन का अर्थ होता है तीर्थंकरों में पूर्ण विश्वास करना। सम्यक कर्म का अर्थ तीर्थंकरों के समान आचरण एवं व्यवहार करना। इन तीन रत्नों के द्वारा ही मनुष्य कर्म बंधन से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

7. तपस्या का महत्त्व—जैन धर्म में तपस्या को विशेष महत्त्व दिया गया है। तपस्या इंद्रियों को वश में करने का अपूर्व साधन है। तपस्या दो प्रकार के हैं—(i) बाह्य तपस्या तथा (ii) आंतरिक तपस्या। अनशन द्वारा शरीर को कष्ट देना तथा रसों का परित्याग करना ही बाह्य तपस्या है, जबकि पापों का प्रायश्चित करना, विनय, सेवा, ध्यान, स्वाध्याय इत्यादि आंतरिक तपस्या है।

8. पंच महाव्रत—जैनियों के अनुसार कर्म बंधन से आत्मा को मुक्ति दिलाने के लिए पांच महाव्रत को अपनाना चाहिए। ये पांच महाव्रत—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह हैं।

9. निर्वाण मार्ग—जैन धर्म के अनुसार निर्वाण जीवन का अंतिम लक्ष्य है। सदाचारी जीवन तथा कठोर नियमों का पालन से निर्वाण का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इस मार्ग को अपनाकर निम्न वर्ण वाला व्यक्ति भी निर्वाण प्राप्त कर सकता है।

10. वर्ण व्यवस्था संबंधी सिद्धांत—जैन धर्म वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं करता है। किन्तु इस धर्म में जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया गया है। इस धर्म में वर्ण एवं जाति का आधार कर्म को माना गया है। कर्म ही एक व्यक्ति को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र बनाता है।

11. मूर्ति पूजन—प्रारंभ में जैन धर्म में मूर्ति पूजा का स्थान नहीं था। लेकिन बाद में जैनी महावीर तथा अन्य तीर्थंकरों की मूर्ति पूजा करने लगे थे।

12. जैन धर्म के ग्रंथ—वर्धमान महावीर के मूल उपदेश 14 जिल्दों में संकलित थे। इस संकलन को पूर्व कहा जाता है। बाद में जैन साधुओं ने 12 अंगों की रचना की जिसे 12 अंग के नाम से जाना जाता है। इन अंगों में उपांग, मूल और सूत्र को भी शामिल किया गया है।

Scanned with CamScanner

13. जैन धर्म के संप्रदाय—जैन धर्म के दो संप्रदाय अस्तित्व में आए—(i) श्वेतांबर तथा (ii) दिगंबर। श्वेतांबर संन्यासी वस्त्र धारण करते हैं, जबकि दिगंबर नग्न रहते हैं। श्वेतांबर की अपेक्षा दिगंबरों में अधिक कट्टरता पायी जाती है।

पतन का कारण—जैन धर्म के पतन से संबंधित निम्नलिखित कारण थे—

1. विलास प्रियता—जैन धर्म के पतन का एक मुख्य कारण था नि:स्वार्थ तथा त्यागी भिक्षुओं का विलासप्रिय हो जाना।

2. राज्याश्रय की समाप्ति—कुछ समय बाद जैन धर्म को राजाओं का आश्रय मिलना बंद हो गया था। मुसलमान अत्याचारों से आक्रांत हिन्दू जाति को इस समय शांति प्रिय धर्म की आवश्यकता नहीं थी।

3. संप्रदायों में विभाजन—जैन धर्म अनेक संप्रदायों में बंट गया था जिसके कारण उसकी शक्ति विच्छिन्न हो गयी थी।

4. हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान—जैन धर्म के पतन का एक महत्त्वपूर्ण कारण था हिन्दू धर्म को पुन: जीवित किया जाना। पुनर्जीवित होने के बाद हिन्दू धर्म इतना आकर्षक बन गया कि सभी लोगों ने उसे अपनाना आरंभ कर दिया। जैन धर्म का पूर्ण पतन नहीं हुआ है। आज भी करीब 13 लाख जैन धर्म के अनुयायी भारत के गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा बिहार में रहते हैं। ये अधिकतर व्यवसायी वर्ग से आते हैं।

जैन धर्म की देन—जैन धर्म परोक्ष तथा प्रत्यक्ष रूप से भारतीय संस्कृति तथा विचारधारा को प्रभावित किया है। जैन धर्म की देन की चर्चा हम निम्न ढंग से कर सकते हैं—

दर्शन—जैन धर्म का दर्शन व्यापक और विस्तृत है। दर्शन के क्षेत्र में स्यादवाद और अनेकांतवाद का सिद्धांत बिल्कुल मौलिक है। जैन दर्शन जहां एक ओर अतिव्यापक है, वहीं दूसरी ओर गंभीरता से युक्त है। इसमें एक ओर जहां व्यक्ति की उन्नति की ओर ध्यान दिया गया है, वहीं दूसरी ओर सभी के कल्याण कामना भी की गयी है। जैन धर्म का अहिंसा सिद्धांत ने भारतवर्ष की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित किया था। समाज में अहिंसा सिद्धांत के कारण पशुबलि पर रोक लगी। कर्मकांड तथा यज्ञ में बलि देने की प्रथा को समाप्त कर दिया गया था। कृषि कर्म तथा पशुपालन से अनाज तथा दुग्ध उत्पादन में बढ़ावा मिला। तत्कालीन राजाओं ने जैन धर्म के अहिंसा सिद्धांत को अंगीकार किया तथा अपने राज्यों में कड़ाई से लागू करवाया।

कला—धर्म तथा दर्शन के अतिरिक्त कला के क्षेत्रों में जैन धर्म की महत्त्वपूर्ण देन है। जैन धर्म के अनुयायियों ने अनेक मंदिरों, मूर्तियों तथा चित्रों का निर्माण किया, जो कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। इस संदर्भ में उदयगिरि का टायगर गुफा तथा एलोरा की इंद्रसभा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अनेक पाषाण स्तंभों का निर्माण भी इस धर्म के अनुयायियों ने किया था। खजुराहो और आबु के जैन मंदिर कला के उत्तम नमूने हैं। ग्वालियर के जैन मंदिर का अपना स्थान है। स्तूपों की पाषाण रोलिग, अलंकृत प्रवेश द्वार, पाषाण छत्र आदि कला के नमूने हैं।

Scanned with CamScanner

साहित्य—जैनियों द्वारा ब्राह्मणों की संस्कृत भाषा के स्थान पर प्राकृत भाषा को अपनाया गया है। इससे प्राकृत भाषा साहित्य का विकास हुआ।

Scanned with CamScanner